श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ तारा पूजा ॥ तारमूलेन न्यासः ॥ अथ ध्यानं ॥ शमशानान्तर संचित्य तत्र कल्पद्रुमं स्मरेत् । तस्याधे मणिपीठे चतुर्नाम शिरोविभूषितं ॥ शिवाशिवहृदा सास्थिसोपमालामिरंतत ॥ चतुर्दिक्षु शवाभूराजीतिगणास्त्रिभूषिता ॥ तन्मध्यमावयद्देवि त्रयैक्यध्यानयोगतः ॥ पुत्रालिंग्य दक्षिणांघ्रेः पुरोमालाविभूषा ॥ रक्तवर्णोदरीभर्त्या ऊर्ध्वैकृत्तशिरोनवयौवनसंपन्नचैवमुद्विभूषिता ॥ मु

प्रसं चक्रसं च वृ। अंकुशं च वृ॥ योनिमुद्रामिति विख्यातं
पञ्चमुद्रानमस्कृते॥ चतुर्भुजा लालजिह्वां महाभीमं व
रप्रदां॥ खड्गं कर्त्रिं धरां दक्षे वामे मुण्डातपत्रान्वितां॥ त्रिं
नेत्रैकजतां ध्यायेत्श्मशानभयभञ्जिनीं॥ बालार्कमण्ड
लाभासां चतुर्बाहुं त्रिलोचनां॥ पञ्चमुण्डात्मभूमध्यगतोदग्रां
करालिनीं सावेशसमरवदनोज्ज्वलां॥ वीरेश्वरां
पकतोयान्तश्चेतयशोधितां॥ धात्रे पूर्वेनमः॥ महाप्रभव

नांतस्थेक्रतुरंगनन्दविगुहे ॥ सर्वभूतहितायानसहेदिप
रमेश्वरी ॥ देवोमभक्तिसुलभेपरिवारसमन्विताय्यावत्त्वपूजयी
स्यामीतावन्नोइहाभव ॥ ह्रीं स्त्रीं ईंमहेगुतारेईहागच्छइहा
तिष्ठईहासन्निधौभवइहासन्निरुद्धाभवयावत्पूजांकरोम्य
हं ॥ ततपाद्यादिभिर्यथाशक्तयुपचारान्ददेम ॐ३पाद्यंन
मः ॥ अर्घ्यं ॥ आचमनि ॥ स्नानं ॥ गं. स्त्रीं. अं. तीं. जं. चुं. चुं. वीं. नैवेद्यं
चयीजलीं ॥ चिरकरा मूद्रा ॥ अथआरतीपूजा ॥ प्रथमचक्रद्वा

पूजापूर्वादिक्रमेण ॥ सप्तास्त्रनाथगमः ॥ यंग्नदेवतायोजलीवर्ती ॥ ७१
विन्दुमध्येमहागमोलेशओंभ्यपूजा ॥ सहस्रादित्यसंकासना
गलयधरं विद्युत्कोटिसमंवक्त्रं हभास्वल्लोचनं ॥ सा
र्द्धचिवलयोपेतंजटाकोटिसुसंस्थितं ॥ महालोकरायसंयु
क्तंपुरातनमकृतं ॥ सूर्य्यविद्युत्समंभास्वन्महामरणीशो
भितं ॥ तद्रूपंमहाकायमशोभ्यंचेमरणीभजे ॥ ओंअशो
भ्यवज्रपूर्व्यंप्रतीच्छत्वाहेतिमंत्रेणपाद्यादिभिपूजयेत् ॥ त

पेण-पूजा ॥ ३ॐ ॐ ३ॐ श्रीं स्वाहा अशोभ्यै पूजयामि नमः त
पंयामि नमः ॥ ॥ विन्दी वाप्ये ॥ ३ॐ स्वगुरु अमुकानन्दनाथै पू
जयामि २ म ते ॥ ३ॐ परगुरु अमुकानन्दनाथं पूजयाः तः ॥ ३ॐ
परापरगुरु अमुकानन्दनाथं पाः पूः तेः ॥ ३ॐ परमेष्टि गुरु अमुका
नन्दनाथ पाः पूः तेः ॥ पञ्चमुद्रा ॥ ३ वटुकेशाय ॥ ३ ह्रीं स्त्रीं ह्रैं वटु
कवटुकाय हृदयाय नमः ॥ ३ नारसिंहे शिरसे स्वाहा ॥ ३ वज्रो
टके शिखायै वषट् ॥ ३ एकजटे कवचाय हुं ॥ ३ महाकरीस्व

नेत्रनाथाय वौषट् ॥ उपिंगल जटाय स्वाहा पू० ॥ अस्त्राय फट् ॥ ॐ वं
रोचन वज्र पुष्पेभ्यो इति इष्ट्वा ॥ पूर्वे ॥ ॐ अं अंकुशे तोमर वज्र पुष्पे
भ्यो इति इष्ट्वा ॥ उत्तर ॥ ॐ पद्मे वज्र पुष्पं० ॥ पश्चिमे ॥ ॐ श्रीखण्ड वज्र
पु० ॥ दाभ्यते ॥ ॐ नं नमा के वज्र पु० ॥ इत्यने ॥ ॐ मं मान के वज्र
पुष्पं० ॥ वायुवे ॥ ॐ पां पाद्य के वज्र० ॥ नैऋते ॥ ॐ तं तारके वज्र० ॥ अग्नये
अष्ट मात्रिका पूजा ॥ ईसानाय पा० पू० ॥ ॐ ब्रह्मी शक्ति वज्रा यसि
श्रीपा० पू० ॥ तर्पयामि ॥ गरुडस्थाय २ ॥ ईनाराय णी श्रीपा० पू० ॥ ॐ
वृषासा २ ॥ ॐ उं महेश्वरी २ ॥ तः ॥ प्रेतासनाय २ ॥ ॐ चामुण्डा

पा.दू.नं.॥ ॐ हुं ह्रीं अः संकार भैरवाय पा.दू.नं.॥ अष्ट भैरवि
पूजा॥ सहा भैरवि पा.दू.॥ नं.॥ सिंह भैरवी पा.दू.॥ नं.॥ ॐ धूं
धूं भैरवी श्रीपा.दू.॥ नं.॥ ॐ भीं भीम भैरवी पा.॥ नं.॥ ॐ उन्मत्त
त भैरवी श्रीपा.दू.नं.॥ ॐ पैंडिक भैरवि पा.दू.नं.॥ ॐ क्रोधो
त्त भैरवि श्रीपा.दू.नं.॥ ॐ भीषण भैरवि पा.दू.नं.॥
भुवनेश्वरी पूजा॥ ॐ पद्मोतक पा.दू.॥ नं.॥ ॐ वि घ्नोतक पा
दू.॥ नं.॥ यमोतक पा दू.॥ नं.॥ नैरका तक पा.दू.नं.॥ इतीचत

ज्ञा॥ भुवलोकपालपूजा॥ ॐ इंद्राय सुराधिपतये सो० गा०
सपरीवाराय सायुधाय सवाहनाय का० पू० मं० नं० ॥ मेधासन्ना
य का० पू० ॥ ॐ अग्नि मेढ्रो० वीर्यनाथ० श्री पा० पू० मं० नं० ॥ आधासना
नमः ॥ ॐ नैऋति गुदे० वीर्यशक्तिकृष्णो मं० नं० ॥ महीसनाय
नमः ॥ यमपेता० वीर्यनाथे० श्री पा० पू० मं० नं० ॥ वंधनसाय स
मुद्रा० वीर्यशक्ति पा० पू० मं० नं० ॥ ॐ वरुणा० पुरुषा० नाथ० वीर्य० शक्ति पा० पू०
मं० नं० ॥ ॐ कुबेराय यक्षो० वीर्ये० शक्ति पा० पू० मं० नं० ॥ वृद्धासनाय २॥

ईं ईं सा स्ताय वि ह्रां धी वं शी पा॰ पू॰ ॥ त॰ ॥ ॐ ॐ नं मे नागा धी
वं शी पा॰ पू॰ ते॰ ॥ ॐ ह्रीं ब्रह्म लोका धी वं शी पा॰ पू॰ ॥ त॰ ॥ अ पुरुष
ती भागो अस्य पू॰ ॥ शं शा क्ति शी पा॰ पू॰ ॥ यं यं शा क्ति शी पा॰ पू॰ ॥ त॰
दं रा ऽ शा क्ति शी पा॰ पू॰ त॰ ॥ रं रं रं शा क्ति पा॰ पू॰ ॥ त॰ ॥ वं व
ज्रा स्त्र शक्ति शी पा॰ पू॰ ॥ ते॰ ॥ ॐ ॐ क्ष शा क्ति पा॰ पू॰ ॥ ॐ गं गदा श
क्ति पा॰ पू॰ ॥ त॰ ॥ ह्रूं त्रि शूल शक्ति पा॰ पू॰ ॥ ते॰ ॥ पं प अस्त्र शक्ति पा॰ पू॰
त॰ ॥ चं चक्र शक्ति पा॰ पू॰ ॥ ते॰ ॥ अजीता अर्चिता सेन ॥ पूर्व गंध ॥

इति आवर्ण प्रजा ॥ सूर्य्यो यै पा॰ पू॰ ॥ अं ॥ दुर्दुदेवी श्रीपा॰ पू॰ ॥ त॰ ॥ वि
दुभोग ॥ ॐ ह्रीं स्त्रीं ह्रूं पद्मा अशोक कनकोद्भवतारादेव्यै श्री-
पा॰ पू॰ ॥ त॰ ॥ ह्रीं स्त्रीं ह्रूं पद्म अक्षरकटादेव्यै श्रीपा॰ पू॰ त॰ ॥ ३ श्री
तिलसरस्वती देव्यै श्रीपा॰ पू॰ ॥ ॐ ५ दुर्दुआनंदशांति मेरु वसही
नाथे सदुश्री तत्रातिलसरस्वती देव्यै श्रीपा॰ पू॰ ॥ ३ श्री अशोक्य
सहीतश्रीउग्रतारादेव्यासोगयसवरीवरायसायुधायसप

कनाय श्रीपा-कु-॥ तः॥ खंड्डाय नमः॥ क्रीं नमः॥ भ्रं राडाये नमः॥
निलप्पाय नमः॥ पूजोतात्पिता मैत्र॥ श्रीसैलोकी देव्यै नमः॥ श्री
प्राधिनी देव्यै नमः॥ श्रीवज्र धरदेवता नमः॥ [illegible] दर्शनं
नैवेद्य-॥ जाप-तोत्र-॥ स्तान॥ नत्वैश्री वज्रधरस्तो-
ॐ ह्रीं एकजटे महाश्मशानाधिपतये मम सर्वोपद्रवान् शोषय शोषय रुद्रोप
रि मम सर्वकार्याणि कुरु परविद्यां माकृस्यतां छिन्धि २ सर्वजगत्
वसमानय ह्रीं स्वाहा॥ पत्नी॥ मैत्र

रक्षावली

ॐ क्रैं रक्षवलिं क्रैं क्रैं रक्षवलिं क्रैं क्रैं क्रों ॥ ॐ चुं क्रैं नमश्चण्डा ॥
सर्व मताय योगोनि गुरु लघु सर्व सिद्धे क्रैं ३ य ह्योही सर्व
लोक निवासो नी ई ३ सर्व लोक हिंदी वादु कन २ वली ंटइ
पुस्तोद मे ॥ ॐ क्रद २ चु क्रद ३ स्वाहा क्रद १ ॐ ह्रैं शक्तिं म
दक गरायै इमाँ रक्षवली ंटइ र मम सर्वो वो हितं कन २ प
वि ह्री ंट २ श्रीमदेक जटा सप्त री वा ए व र क्षवली ंटइ र

स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं ह्रूँ ह्रीं ह्रैं ॐ ह्रौं ह्रः नवलिं रक्ष रक्ष फट् स्वा
हा ॥
ॐ प्रकट विकट दुष्ट घोरस्पात्तहासा ॥ नंद शिरकृतमा
लमिंधरणातिरवदवा ॥ निर्भुवनजगथानि हस्तवोंड
चक्रटंकरंतकयानोचानमाइयनंरा ॥ ॥

ॐ ह्रां ह्रीं ॐ फट्

प्रथमा॥ क्षीत पेतात्या०॥ अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं ऌं ॡं एं ऐं ओं औं
अं अः ह्रे - - -

आत्मा तत्वे नस्थु लदेहे सोधया मि शिवतेस्वाहा॥ १॥
द्वितीय॥ अयाष्टैसते०त्यादि॥ ह्रीं श्रीं नाथ कुलाधिष्ठा-
यक कालनि यति पुरुषात्मरि कं ख्रें घें ङें चें छें जें
झें ञें टें ठें डें ढें णें तें थें दें धें नें पें फें बें भें में स्रों विद्यातत्वे

नमस्मदेवं शोधयामि स्वाहा ॥ २ ॥ तृतीय ॥
ॐ अविनाशो त्यादि० ह्रौं ॐ प्रतेहकारबुद्धिमनलक्वसु
जिह्वा धूम्रवाक करालीपादवा ऊर्ध्वस्य स्फुलिंगिनी वं
रं जंधकाशवा ऊ अग्नि सलिल मृत्यो तमनेय
रं नमः शं संहं लं श्रं शिवतत्वं शोधयामि स्वाहा ॥

चतुर्थी ---

ह्रीँ श्रीँ शिवशक्तिसदाशिवेश्वरविद्याकलात्मने घृतेन्द्र
कारबुद्धिमनश्चित्त्वक्चक्षुःश्रोत्रघ्राणवाक्पाणि
पादपायुसवदपस्तेजःपृथ्वीगन्धाकाशनामाग्नि
सलिलभूतात्मनेँ कँ चँ टँ तँ पँ यँ शँ सर्वतत्वे
भ्यस्तत्वत्रयान्तर्विद्यँ शोधयामि शिवो हं स्वाहा

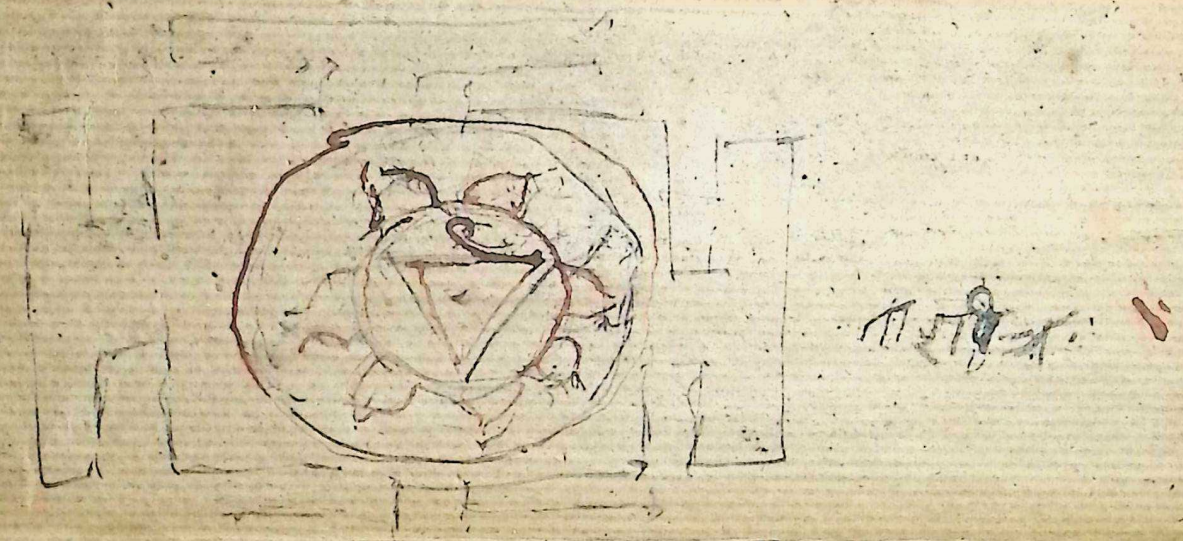

अराजत ॥ सोना ॥ कंचन ॥ दिये धनको धन्ये ॥
अर्धपाक ॥१॥ शोरबर ॥२॥ [illegible] ॥
अचदछुस ॥ १ ॥ वनस्पति ग. सौ. २५ [illegible]
सैना ॥१॥ इन्द्र ॥२॥ [illegible]
[illegible]